त्रिपुरा की लोककथाएँ

भाग-२

मिलन रानी जमातिया

तुई माँ (जल देवी)

चार-पाँच घरों का एक छोटा गाँव था। उसमें एक गरीब परिवार था। परिवार में केवल माँ और बेटा थे। माँ, रोज सोचा करती थी कि किसी तरह बेटे को अच्छा से अच्छा खाना मिले, पर ऐसा संभव न था। गरीबी आड़े आती थी।

एक दिन घर में कुछ न था। माँ ने मछली वाले से विनती की परंतु वह उधार देने को तैयार नहीं हुआ। शाम को माँ ने यही बात बेटे से कही कि आज तेरे लिए अच्छा खाना न बना सकी। बेटे ने माँ को आश्वासन दिया- कोई बात नहीं। माँ कल बना लेना।

अगले दिन लड़के ने जंगल से लकड़ी लाकर, उसे बेचकर चावल लिया, परंतु मछली के लिए पैसे नहीं बचे। लड़के ने सोचा रास्ते में राजा का पोखर है उसी से मछली पकड़ लूँगा। लड़का पोखर में काफी देर तक कोशिश करता रहा, परंतु कोई मछली हाथ न लगी। शाम होने वाली थी। लड़के ने खीझकर राजा के पोखर से एक राजहंस पकड़कर थैले में डाल लिया।

माँ, राजहंस को देखकर घबरा गई और उसे वापिस छोड़ आने को कहा। लड़के ने नहीं सुना। हंस को काट लाया और माँ से बोला- इसे पका ले। आज तो कम से कम अच्छा खाना खा ले। इधर राजा के सिपाहियों ने राजहंस को ढूँढना शुरू किया। सिपाही ढूँढ़ते-ढूँढ़ते जब गाँव आये तो उन्हें एक घर के पीछे राजहंस के कटे पंख मिले।

पूछताछ हुई। सिपाही लड़के को गिरफ्तार कर ले गये। माँ इससे